केन्द्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

शैक्षणिक सत्र 2024-25

संबल अध्ययन सामग्री

हिन्दी कोर्स 'अ' (कोड नं. 002)

कक्षा - दसवीं

प्रेरणा स्रोत

डॉ. आर. सेंदिल कुमार
उपायुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

संरक्षक

श्रीमती किरण मिश्रा
श्रीमती निर्मला बुडानिया
श्री विजय वीर सिंह
सहायक उपायुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग

निर्माण एवं संकलन

हिंदी विभाग, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, उज्जैन

संयोजक

श्री मुकेश कुमार मीना

प्राचार्य, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, उज्जैन

सदस्य

श्री ओमप्रकाश बैरवा प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिंदी

श्री जुगल किशोर मीना प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिंदी

श्रीमती चेतना शर्मा प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिंदी

" कुछ लिख के सो, कुछ पढ़ के सो, जिस जगह जागा सुबह, कुछ उससे आगे, पढ़ के सो "

भवानी प्रसाद मिश्र

अपठित गद्यांश व पद्यांश को हल करने के चरणबद्ध तरीके

1. सर्वप्रथम दिए गए अपठित गद्यांश व पद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मूलभाव को आत्मसात करना चाहिए।
2. पहली बार में समझ में न आए अंशों,शब्दों वाक्यों को गहनता से पढ़ना चाहिए।
3. यदि कुछ शब्दों के अर्थ अब भी समझ में नहीं आते हों तो उनका अर्थ गद्यांश व पद्यांश के प्रसंग से जानने का प्रयास करना चाहिए।
4. अनुमानित अर्थ को गद्यांश व पद्यांश के अर्थ से मिलाने का प्रयास करना चाहिए।
5. गद्यांश व पद्यांश में आए व्याकरण की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
6. अब प्रश्नों को पढ़कर संभावित उत्तर गद्यांश व पद्यांश में से खोजने का प्रयास करना चाहिए।
7. शीर्षक समूचे गद्यांश व पद्यांश का प्रतिनिधित्व करता हुआ कम से कम एवं सटीक शब्दों में होना चाहिए।
8. प्रतीकात्मक शब्दों एवं रेखांकित अंशों की व्याख्या करते समय विशेष ध्यान देना चाहिए।
9. मूल भाव या संदेश संबंधी प्रश्नों का जवाब पूरे गद्यांश पर आधारित होना चाहिए।
10. प्रश्नों का उत्तर देते समय यथासंभव अपनी भाषा का ध्यान रखना चाहिए।
11. अपने उत्तर की भाषा सरल, सुबोध व प्रभावशाली होनी चाहिए।
12. प्रश्नों का जवाब गद्यांश व पद्यांश पर आधारित होना चाहिए आपके अपने विचार या राय से नहीं होने चाहिए
13. प्रश्नों का जवाब सटीक शब्दों में देना चाहिए घुमाफिरा कर जवाब देने का प्रयास नहीं करना चाहिए।
14. प्रश्नों को पढ़कर संभावित उत्तर को गद्यांश में रेखांकित कर लेना चाहिए।
15. कथन व कारण संबंधी प्रश्नों को गद्यांश व पद्यांश के आधार पर समावेशीरूप में समझकर उत्तर देने चाहिए।
16. गद्यांश व पद्यांश में दी गई महत्वपूर्ण सूचनाओं को रेखांकित करते रहना चाहिए। इससे विषय-वस्तु व पठन कौशल वाले प्रश्नों को हल करने में आसानी होती है।
17. भाषिक संरचना एवं व्याकरण संबंधी प्रश्नों के लिए गद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों,मुहावरों आदि को रेखांकित करना चाहिए।
18. शीर्षक संबंधी प्रश्न पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा पूरे गद्यांश को पढ़ने व समझने के पश्चात ही उसका शीर्षक लिखना चाहिए।
19. सभी प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने व समझने के पश्चात ही उनका उत्तर लिखना प्रारंभ करना चाहिए।
20. अंत में विद्यार्थी द्वारा एक बार सभी प्रश्नों के उत्तरों को पुनः ध्यानपूर्वक पढ़कर जांच लेना चाहिए।

उदाहरण स्वरूप अपठित गद्यांश

प्रश्न-1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

लोगों का मानना है कि बाल-श्रम जैसी सामाजिक कुरीति को समाप्त करने का दायित्व सिर्फ सरकार का है। यदि सरकार चाहे तो कानून का पालन न करने वालों एवं कानून भंग करने वालों को सजा देकर बाल-श्रम को समाप्त कर सकती है, किंतु वास्तव में ऐसा करना असंभव है। हमारे घरों में, ढाबों में, होटलों में अनेक बाल-श्रमिक मिल जाएंगें , जो कड़ाके की ठंड और तपती धूप की परवाह किए बगैर काम करते हैं। हमें सोचना होगा कि सभ्य समाज में यह अभिशाप अभी तक क्यों विद्यमान है ? क्यों तथाकथित सभ्य एवं सुशिक्षित परिवारों में नौकरों के रूप में छोटे बच्चों को पसंद किया जाता है ? क्यों आर्थिक रूप से सशक्त लोगों को घर के कामकाज हेतु गरीब एवं गाँव के बाल-श्रमिक ही पसंद आते हैं ? आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकारी स्तर से लेकर व्यक्तिगत स्तर तक सभी लोग इसके प्रति सजग रहें और बाल-श्रम के कारण बच्चों का बचपन न छिन जाए , इसके लिए कुछ सार्थक पहल करें। हमें आज ही बाल-श्रम के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए और जहाँ कोई बच्चा हमें बाल मजदूरी करते हुए मिले इसकी शिकायत हमें नजदीकी पुलिस स्टेशन में करनी चाहिए। बाल-श्रम को खत्म करना केवल सरकार का ही नहीं, बल्कि हमारा भी कर्त्तव्य है। बाल-श्रम एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है। इस समस्या को सभी के द्वारा जल्द-से-जल्द खत्म करने की जरूरत है। अगर जल्दी ही इस समस्या पर कोई कदम नहीं उठाया गया तो यह पूरे देश को दीमक की तरह खोखला कर देगी। बच्चे ही हमारे देश का भविष्य हैं अगर उन्हीं का बचपन अंधेरे और बाल-श्रम में बीतेगा तो हम एक सुदृढ़ भारत की कल्पना कैसे कर सकते हैं। अगर हमें नए भारत का निर्माण करना है तो बाल मजदूरी को जड़ से उखाड़ फेंकना

होगा। यह सिर्फ हमारे और सरकार के सहयोग से ही संभव है। इसलिए हम सबका दायित्व है कि इनकी दशा-परिवर्तन हेतु मनोयोगपूर्वक सार्थक प्रयास करें, जिससे राष्ट्र के भावी नागरिकों के बालपन की स्वाभाविकता बनी रहे।

(क) सभ्य समाज में आज भी कौन-सा अभिशाप व्याप्त है ?

(1) बाल-श्रम का (2) सामाजिक कुरीतियों का (3) सशक्तता का (4) इनमें से कोई नहीं

(ख) निम्नलिखित कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए?

देश को सार्थक पहल करने की आवश्यकता है, जिससे

1. बाल-श्रम के कारण बच्चों की शिक्षा छिन जाए

2. बाल-श्रम के कारण बच्चों का बचपन न छिन जाए

3. बाल-श्रम के कारण बच्चों को खुशियाँ मिल जाएँ

4. बाल-श्रम के कारण बच्चे विकलांग न हो जाएँ

कूट- (1) केवल 2 सही है (2) 1 और 2 सही है (3) 3 और 4 सही है (4) 2 और 3 सही है

(ग) कथन (A) छोटे बच्चों को सभ्य एवं सुशिक्षित परिवारों में नौकरों के रूप में पसंद किया जाता है।
कारण (R) बाल-श्रमिक आसानी से कम पैसों में मिल जाते हैं।

(1) कथन(A) गलत है , किंतु कारण (R) सही है।

(2) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(3) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(4) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) प्रस्तुत गद्यांश का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(ङ) भारत के नव-निर्माण के लिए क्या आवश्यक है ?

अपेक्षित उत्तर

(क) (1) बाल-श्रम का

(ख) (1) केवल 2 सही है

(ग) (3) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(घ) प्रस्तुत गद्यांश में बाल-श्रम जैसी सामाजिक कुरीति के विषय में बताया गया है। बाल-श्रम हमारे सभ्य समाज के लिए अभिशाप है, इसलिए सरकार व लोगों दोनों का कर्त्तव्य है कि इस सामाजिक कुरीति को जल्द-से- जल्द समाप्त करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ, जिससे सुदृढ़ भारत की कल्पना साकार हो सके।

(ङ) भारत के नव-निर्माण के लिए आवश्यक है कि बाल मजदूरी को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बाल-श्रम के कारण बच्चों का बचपन नहीं छीनना चाहिए। इसके लिए हम सभी का दायित्व है कि हम सरकार के साथ मिलकर इसमें सहयोग करें।

उदाहरण स्वरूप अपठित पद्यांश

प्रश्न- निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों को हल कीजिए –

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं छापी गई इसकी कहानी,
ज्ञात होता है न इसका भेद औरों की ज़बानी
अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,

खोल इसका अर्थ पंथी, पथ का अनुमान कर ले।
यह बुरा है या कि अच्छा व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
जब असंभव, छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले,
है अनिश्चित किस जगह पर सरित गिरी गह्वर मिलेंगे
है अनिश्चित किस जगह पर बाग वन सुंदर खिलेंगे,
किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब कंटको के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएंगे, मिलेंगे कौन सहसा,
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले।

(क) प्रस्तुत काव्यांश में बाट की पहचान से क्या तात्पर्य है ?

(1) लक्ष्य की पहचान
(2) दिशा की पहचान
(3) ज्ञान की पहचान
(4) इनमें से कोई नहीं

(ख) प्रस्तुत काव्यांश के केंद्रीय भाव हेतु दिए गए कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनिए।

(1) मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं करनी चाहिए
(2) मनुष्य को दूसरों के अनुभव के आधार पर मार्ग तय करना चाहिए
(3) मनुष्य को अन्य पथिकों का अनुसरण करना चाहिए
(4) मनुष्य को यात्रा सरल बनाने के लिए पथ पर विश्राम करना चाहिए

कूट - (1) केवल 1 सही है (2) 2 और 3 सही है (3) 1,2 और 4 सही है (4) 1 और 2 सही है

(ग) निम्नलिखित कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए
अपने लक्ष्य का भेद स्वयं ही खोजना पड़ता है,क्योंकि

(1) इसके बारे में ज्ञान पुस्तकों से नहीं मिलता
(2) मार्ग कठिनाइयों से होकर गुजरता है
(3) लोग आपस में ईर्ष्या रखते हैं
(4) मार्ग में सुंदर जगह देखने को मिलती है

कूट- (1)केवल 1 सही है (2) 2 और 3 सही है (3) 1 और 4 सही है (4) 2 और 4 सही है

(घ) काव्यांश के आधार पर बताइए कि पुस्तकों में किसकी कहानी नहीं मिलती है ?

(ङ) "तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले। "पंक्ति में "तू" शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

अपेक्षित उत्तर

(क) (1) लक्ष्य की पहचान

(ख) (1) केवल 1 सही है

(ग) (1) केवल 1 सही है

(घ) काव्यांश के आधार पर पुस्तकों में जीवन रूपी मार्ग में क्या-क्या सुख-दुख आएंगे, क्या-क्या बाधाएं आएंगी और कौन-सा लक्ष्य जीवन के लिए श्रेष्ठ होगा इनकी कहानी नहीं मिलती।

(ङ) "तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले।" पंक्ति में "तू" शब्द मनुष्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। प्रस्तुत कविता मनुष्य को सचेत करते हुए अपने जीवन रूपी मार्ग की पहचान करने के लिए अवगत कराती है।

रचना के आधार पर वाक्य भेद

सार्थक शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह जिससे निश्चित अर्थ की प्राप्ति होती है, उसे वाक्य कहते हैं।

वाक्य के अंग

उद्देश्य	विधेय
वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए। सामान्यतया वाक्य का कर्ता ही उद्देश्य होता है। जैसे- दिनेश पुस्तक पढ़ रहा है। इस वाक्य में 'दिनेश' उद्देश्य है।	उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, वह विधेय कहलाता है। इसके अंतर्गत क्रिया, क्रिया- विस्तार, कर्म, कर्म-विस्तार आदि आते हैं। जैसे - दिनेश पुस्तक पढ़ रहा है। इस वाक्य में 'पुस्तक पढ़ रहा है' विधेय है।

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं-

1)साधारण या सरल वाक्य 2) संयुक्त वाक्य 3)मिश्र / मिश्रित वाक्य

उपवाक्य

उपवाक्य वाक्य का अंश होता है, जिसमें उद्देश्य और विधेय होते हैं। अत:पदों का ऐसा समूह, जिसका अपना अर्थ हो, जो सामान्यतया एक वाक्य का भाग हो तथा जिसमे उद्देश्य एवं विधेय सम्मिलित हो उपवाक्य कहलाता है। जो उपवाक्य, वाक्य से अलग होकर भी पूर्ण अर्थ प्रकट करें, उसे प्रधान उपवाक्य तथा जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के बिना पूर्ण अर्थ ना दे, उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं।
जैसे- बालगोबिन भगत जानते थे कि अब बुढ़ापा आ गया है।

आश्रित उपवाक्य- अब बुढ़ापा आ गया है।
प्रधान उपवाक्य- बालगोबिन भगत जानते थे।

उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

1)संज्ञा उपवाक्य 2)विशेषण उपवाक्य 3)क्रियाविशेषण उपवाक्य

1.**संज्ञा उपवाक्य**- जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्ता, कर्म अथवा क्रिया पूरक के रूप में प्रयुक्त हो, उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। संज्ञा उपवाक्य के आरंभ में कि शब्द होता है।
जैसे- * मेरा विश्वास था कि वह अवश्य उत्तीर्ण होगा।

2. **विशेषण उपवाक्य**- जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के संज्ञा पद की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं।
जैसे- 1.जो बात सुनो उसको समझो।

2. वह लड़का, जो कल रोया था, आज नहीं आया है।

3. **क्रियाविशेषण उपवाक्य** - जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है, उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते हैं।
जैसे- जब वह विद्यालय में था तब उसके कुछ दोस्त घर पर आए थे।
मुख्य और आश्रित उपवाक्य को पहचानना
वाक्य में मुख्य उपवाक्य की क्रिया ही मुख्य क्रिया होती है।
वाक्यों में आए आश्रित उपवाक्यों का आरंभ सामान्यतया समुच्चयबोधक शब्दों से होता है।
जैसे- जिसने, कि, जिन्हें, जिसमें, जो, जिसको, जहां, जब, क्योंकि, यदि, तब, परंतु आदि।
आश्रित उपवाक्य वाक्यों के आरंभ, मध्य या अंत में भी आते हैं।

1.**सरल/साधारण वाक्य**- जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। इसमें एक ही मुख्य क्रिया होती है।
जैसे- रीना सोती है।

2. **संयुक्त वाक्य**- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य या स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।
यह दोनों पूर्ण अर्थ देने में सक्षम होते हैं और वे किसी और वे किसी अव्यय या योजक शब्द (किंतु, परंतु, लेकिन, बल्कि, अत:,एवं, और, अथवा, तथा, इसलिए, फिर भी, पर आदि) द्वारा जुड़े हों।
संयुक्त वाक्य में प्रयुक्त वाक्य एक- दूसरे पर आश्रित नहीं होते हैं।
जैसे- राम पढ़ रहा था परंतु रमेश सो रहा था।

3. **मिश्र या मिश्रित वाक्य**- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और उसके आश्रित एक या एक से अधिक उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं। प्रधान उपवाक्य के साथ अन्य उपवाक्य जैसे कि, यदि, अगर, तो, तथापि, यद्यपि इसलिए, जिसका, जिसे आदि अव्यय पदों से जुड़े रहते हैं। जैसे- यदि वर्षा हो जाती तो अकाल नहीं पड़ता।

वाच्य

वाच्य का शाब्दिक अर्थ होता है- बोलने का विषय। क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन भेद होते हैं- **1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3.भाववाच्य**

1. **कर्तृवाच्य** - जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष भी कर्ता के अनुसार ही प्रयोग किए जाते हैं। इस वाच्य में 'ने' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। इस वाच्य में सकर्मक और अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे- हालदार साहब ने पान खाया।

2. **कर्मवाच्य** - जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इस वाच्य में कर्ता के बाद 'से' 'द्वारा' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग किया जाता है। इस वाच्य में सकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे - रवि द्वारा पत्र लिखा जाता है।

3. **भाववाच्य** - जिस वाक्य में भाव की प्रधानता होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में क्रिया सदा एक वचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है। इसमें क्रिया स्वयं प्रधान होती है। जैसे - उससे चला नहीं जाता।

वाच्य परिवर्तन

- जवानों ने आतंकवादियों को मारा। (कर्मवाच्य में बदलिए)

- जवानों द्वारा आतंकवादी मारे गए।
- पक्षी आकाश में उड़ते हैं। (भाववाच्य में बदलिए)
- पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है।

पद- परिचय

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है,तो उसे पद कहते हैं। वाक्यों में आने वाले पदों का व्याकरणिक दृष्टि से परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। पदों का परिचय देते समय निम्नलिखित बातें बताना आवश्यक होता है –

- संज्ञा– तीनों भेद, लिंग, वचन, कारक क्रिया के साथ संबंध।
- सर्वनाम- सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया से संबंध।
- विशेषण- विशेषण के भेद, लिंग, वचन और उसका विशेष्य।
- क्रिया -क्रिया के भेद, लिंग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य,धातु कर्म और कर्ता का उल्लेख।
- क्रियाविशेषण- क्रियाविशेषण का भेद तथा जिसकी विशेषता बताई जा रही है, का उल्लेख।
- समुच्चयबोधक-भेद, जिन शब्दों या पदों को मिला रहा है, का उल्लेख।
- संबंधबोधक-भेद, जिसके साथ संबंध बताया जा रहा है, का उल्लेख।
- विस्मयादिबोधक- हर्ष, भाव, शोक, घृणा, विस्मय आदि किसी एक भाव का निर्देश।

पद-परिचय के उदाहरण

1. उदिता यहाँ बच्चों को पढ़ाती थी।
उदिता- व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'पढ़ाती थी' का कर्ता।
बच्चों को- जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्म कारक।
पढ़ाती थी- सकर्मक क्रिया, एकवचन, स्त्रीलिंग अन्य पुरुष, कर्तृवाच्य, कर्ता-उदिता

2. मधुकर यहाँ पिछले साल रहता था।
मधुकर- व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'रहता था' क्रिया का कर्ता।
यहाँ- क्रियाविशेषण, स्थान सूचक, 'रहना' क्रिया का निर्देश करने वाला।
रहता था- अकर्मक क्रिया, एकवचन पुल्लिंग, अन्य पुरुष, भूतकाल, कर्तृवाच्य, कर्ता 'मधुकर'।

अलंकार

अलंकार का अर्थ है- आभूषण अर्थात् सुंदरता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होने वाले वे साधन जो सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं। कविगण कविता रूपी कामिनी की शोभा बढ़ाने हेतु अलंकार नामक साधन का प्रयोग करते हैं। इसीलिए कहा गया है-'अलंकरोति इति अलंकारः'

परिभाषा : जिन गुण धर्मों द्वारा काव्य की शोभा बढ़ाई जाती है, उन्हें अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद –
काव्य में कभी अलग-अलग शब्दों के प्रयोग से सौंदर्य में वृद्धि की जाती है, तो कभी अर्थ में चमत्कार पैदा करके। इस आधार पर अलंकार के दो भेद होते हैं –
(अ) शब्दालंकार (ब) अर्थालंकार

अर्थालंकार के पाँच भेद हैं –

1.उपमा अलंकार 2. रूपक अलंकार 3.उत्प्रेक्षा अलंकार 4.अतिशयोक्ति अलंकार 5.मानवीकरण अलंकार

1. उपमा अलंकार- जब काव्य में किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी अत्यंत प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से की जाती है तो उसे उपमा अलंकार कहते हैं।

जैसे-पीपर पात सरिस मन डोला।
यहाँ मन के डोलने की तुलना पीपल के पत्ते से की गई है। अतः यहाँ उपमा अलंकार है।
उपमा अलंकार के अंग-इस अलंकार के चार अंग होते हैं –
उपमेय- जिसकी उपमा दी जाय। उपर्युक्त पंक्ति में मन उपमेय है। उपमान- जिस प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से उपमा दी जाती है।
साधारण धर्म- उपमेय-उपमान की वह विशेषता जो दोनों में एक समान है। (उपर्युक्त उदाहरण में 'डोलना' साधारण धर्म है।)
वाचक शब्द- वे शब्द जो उपमेय और उपमान की समानता प्रकट करते हैं।
उपर्युक्त उदाहरण में 'सरिस' वाचक शब्द है।
सा, सम, सी, सरिस, इव, समाना आदि कुछ अन्यवाचक शब्द है।

अन्य उदाहरण –
1. मुख मयंक सम मंजु मनोहर।
उपमेय – मुख उपमान – मयंक साधारण धर्म – मंजु मनोहर वाचक शब्द – सम।
2. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी।
उपमेय – बच्ची उपमान – फूल साधारण धर्म – कोमल वाचक शब्द – सी

2. रूपक अलंकार- जब रूप-गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय पर उपमान का भेदरहित आरोप होता है तो उसे रूपक अलंकार कहते हैं।
रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में भिन्नता नहीं रह जाती है; जैसे-चरण कमल बंदो हरि राई।
यहाँ हरि के चरणों (उपमेय) में कमल(उपमान) का आरोप है। अत: रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण – (1)मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता। (2) भजमन चरण कँवल अविनाशी।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार- जब उपमेय में गुण-धर्म की समानता के कारण उपमान की संभावना कर ली जाए, तो उसे उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं;
जैसे – कहती हुई यूँ उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम कणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए॥
उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान- मनहुँ, मानो, जानो, जनहुँ, ज्यों, जनु आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

4. अतिशयोक्ति अलंकार – जहाँ किसी व्यक्ति,वस्तु आदि के गुण, रूप सौंदर्य आदि का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि जिस पर विश्वास करना कठिन हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे – एक दिन राम पतंग उड़ाई। देवलोक में पहुँची जाई॥

5. मानवीकरण अलंकार- जब जड़ पदार्थों और प्रकृति के अंग (नदी, पर्वत, पेड़, लताएँ, झरने, हवा, पत्थर, पक्षी) आदि पर मानवीय क्रियाओं का आरोप लगाया जाता है अर्थात् मनुष्य जैसा कार्य व्यवहार करता हुआ दिखाया जाता है तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।
जैसे- हरषाया ताल लाया पानी परात भरके।

गद्य /पद्य भाग

1 निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-(1×5=5)

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंजिला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों, पत्रिकाओं और अखबारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं। हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वहीन माँ सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिता जी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिता जी इंदौर में थे, जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था।

(1) प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार लेखिका के पिता जी-

(क) एक अध्यापक थे। (ख) एक पत्रकार थे।
(ग) एक लेखक थे। (घ) एक अध्ययनशील व्यक्ति थे।

(ii) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-

कथन (A) : लेखिका की माँ अपने परिवार के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं।
कारण (R) : वह बेपढ़ी-लिखी महिला थी।
(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(iii) इंदौर में लेखिका के पिताजी की सामाजिक स्थिति थी-उचित विकल्प का

1. एक विशिष्ट व्यक्ति की। 2 सामान्य व्यक्ति की
3. एक जिम्मेदार व्यक्ति की। 4 एक प्रतिष्ठित व सम्मानित व्यक्ति की

विकल्प
(क) कथन 1 और 2 सही हैं। (ख) कथन 1,3 और 4 सही हैं।
(ग) केवल कथन 4 सही है। (घ) कथन 1,2 और 3 सही हैं।

(iv) माँ का कमरा कहाँ था?
(क) ऊपरी मंज़िल पर। (ख) दूसरी मंज़िल पर
(ग) निचली मंज़िल पर। (घ) पहली मंज़िल पर

(v) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर लेखिका के समय का समाज कैसा था? उचित विकल्प का चयन कीजिए-
1. नारी प्रधान। 2. पुरुष प्रधान
3. जाति प्रधान। 4. धर्म प्रधान

विकल्प
(क) कथन 1 और 2 सही हैं। (ख) कथन 1, 2 और 3 सही हैं।
(ग) केवल कथन 2 सही हैं। (घ) कथन 1, 2 और 4 सही हैं।

उत्तर
(i) (घ) एक अध्ययनशील व्यक्ति थे।
(ii) (घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(iii) (ग) केवल कथन 4 सही है।
(iv) (ग) निचली मंजिल पर
(v) (ग) केवल कथन 2 सही है।

2 निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए।

बादल, गरजो !
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले

विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले !
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो-
बादल, गरजो-
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकलजन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन !
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो-
बादल, गरजो !

(1) उपर्युक्त काव्यांश में बादलों की तुलना किससे की गई है? सही विकल्प का चयन कीजिए-
1. पृथ्वी से। 2. दहाड़ते शेर से
3. काले घुँघराले बालों से। 4. इंद्रधनुष से

विकल्प
(क) कथन 3 सही है। (ख) कथन 1 और 2 सही हैं।
(ग) कथन 2 और 3 सही हैं। (घ) कथन 1 और 4 सही हैं।

(ii) बादल के हृदय में .....जैसा/जैसी चमक है।
(क) चाँद। (ख) सूरज
(ग) तारे। (घ) बिजली

(iii) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-
कथन (A) : कवि अपनी रचनाओं से समाज में परिवर्तन ला सकता है।
कथन (R) : कवि की नई कविता में असीम ऊर्जा होती है।
(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही हैं किंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(iv) कवि बादल से जल बरसाने की प्रार्थना करता है क्योंकि.....
(क) सभी लोग तपती गर्मी से बेहाल थे।
(ख) गर्मी से फसल सूख रहे थे।
(ग) धरती पर अकाल पड़ गया था।
(घ) गर्मी से नदी-तालाब सूख रहे थे।

(v) कवि ने बादल को क्रांति का प्रतीक माना है। कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए-
1. धरती को शीतलता प्रदान करने के कारण
2. समाज में परिवर्तन लाने की क्षमता के कारण
3. प्यासे लोगों की प्यास बुझाने के कारण
4. गर्जना करने की क्षमता के कारण

विकल्प

(क) कथन 2 सही है। (ख) कथन 1 और 2 सही हैं।

(ग) कथन 2 और 3 सही हैं। (घ) कथन 1 और 4 सही हैं।

उत्तर

(i) (क) कथन 3 सही है।

(ii) (घ) बिजली

(iii) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(iv) (क) सभी लोग तपती गर्मी से बेहाल थे।

(v) (क) कथन 2 सही है।

क्षितिज भाग -2

1 पद (कवि-सूरदास)

पहले पद में गोपियाँ उद्धव को भाग्यशाली कहते हुए भाग्यहीन बता रही हैं कि वह कृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम के बंधन में नहीं बंध पाए। उद्धव की तुलना तेल लगी गागरी व कमल के पत्ते से की है।दूसरे पद में गोपियाँ यह स्वीकार करती हैं कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में हीं रह गई। कृष्ण के लिए उनके प्रेम की गहराई को प्रकट करती है। तीसरे पद में वे उद्धव की योग साधना को कड़वी-ककड़ी जैसा बताकर अपने एकता वाले प्रेम के विश्वास को प्रकट करती हैं। चौथे पद में उद्धव को ताना मारती है कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है और अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को प्रजा का हित याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता हैं।

प्रश्न 1- उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर- उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है -

1- कमल के पत्ते से, जो जल में रहता है लेकिन उस जल का निशान भी नहीं लगता

2- जल में पड़ी तेल की गागर से, जिस पर जल की एक बूंद भी नहीं ठहरती।

प्रश्न 2- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित हैं?

उत्तर- यह व्यंग्य निहित हैं कि उद्धव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके मन में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम नहीं उत्पन्न हुआ। वास्तव में गोपियाँ उद्धव को भाग्यशाली न बताकर उसे भाग्यहीन बता रही हैं।

प्रश्न 3 - गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने के लिए कहा है?

उत्तर- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कहा है जिनके मन स्थिर नहीं है तथा चकरी के समान घूमते रहते हैं। ऐसे ही लोगों को योग के द्वारा मन एकाग्र करने की आवश्यकता है ।

2 राम लक्ष्मण परशुराम संवाद (कवि - तुलसीदास)

राम के हाथ से सीता स्वयंवर में शिव धनुष टूटने पर परशुराम क्रोधित हो जाते हैं और राम पर दोषारोपण करते हैं। परशुराम, शिव जी के धनुष को तोड़ने के लिए राम को दोष देते हैं।लक्ष्मण, राम का बचाव करते हैं और कहते हैं कि यह धनुष उनके भाई ने नहीं तोड़ा, बल्कि उनके छूने से यह अपने आप टूट गया। परशुराम, लक्ष्मण के वचनों से और भी ज़्यादा क्रोधित हो जाते हैं। राम, शांति और विनम्रता से परशुराम को उत्तर देते हैं।

प्रश्न 1 परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ?

उत्तर:- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए –

1. बचपन में तो हमने कितने ही धनुष तोड़ दिए परन्तु आपने कभी क्रोध नहीं किया इस धनुष से आपको विशेष लगाव क्यों हैं?

2. हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा।

3. श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वत: टूट गया।
4. इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था। इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था?

प्रश्न 2 परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा?
उत्तर परशुराम ने अपने विषय में ये कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं और क्रोधी स्वभाव के हैं। समस्त विश्व में क्षत्रिय कुल के विद्रोही के रुप में विख्यात हैं। उन्होंने अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर इस पृथ्वी को ब्राह्मणों को दान में दिया है और अपने हाथ में धारण इस फरसे से सहस्त्रबाहु के बाँहों को काट डाला है। इसलिए हे नरेश पुत्र। मेरे इस फरसे को भली भाँति देख ले। राजकुमार। तू क्यों अपने माता-पिता को सोचने पर विवश कर रहा है। मेरे इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है।

प्रश्न 3 लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई ?
उत्तर:- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई है –
(1) शूरवीर युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करके ही अपनी शूरवीरता का परिचय देते हैं।
(2) वीरता का व्रत धारण करने वाले वीर पुरुष धैर्यवान और क्षोभरहित होते हैं।
(3) वीर पुरुष स्वयं पर कभी अभिमान नहीं करते।
(4) वीर पुरुष किसी के विरुद्ध गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते।
(5) वीर पुरुष दीन-हीन, ब्राह्मण व गायों, दुर्बल व्यक्तियों पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते एवं अन्याय के विरुद्ध हमेशा निडर भाव से खड़े रहते हैं।
(6) किसी के ललकारने पर वीर पुरुष परिणाम की फ़िक्र न कर के निडरता पूर्वक उनका सामना करते हैं।

3 आत्मकथ्य (कवि - जयशंकर प्रसाद)

कवि ने इस कविता में अपने जीवन के यथार्थ और अभावों को मार्मिकता से बताया है। कवि ने बताया है कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन के यथार्थ को प्रकट नहीं करना चाहता। कवि ने बताया है कि अपनी भूलों और दूसरें द्वारा धोखा देने को व्यक्त करने में हीनता की अनुभूति होती है। कवि ने बताया है कि आत्मकथा लिखना न तो कवि के हित में है और न दूसरों के हित में। कवि ने बताया है कि दुनिया कवि की मासूमियत, मासूम व्यवहार और सरल स्वभाव का मज़ाक उड़ायेगी। कवि ने बताया है कि अपने जीवन की अति सामान्य कथा को दूसरों को बताकर अपनी सरलता का मज़ाक नहीं बनाना चाहते। कवि ने बताया है कि उनकी अंतर्मुखी प्रकृति के कारण अपने अनुभवों को स्वयं तक ही रखना उन्हें उचित लगता है।

प्रश्न 1 कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं ?
उत्तर कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहते हैं क्योंकि उनका जीवन दुखदायी घटनाओं से भरा पड़ा है। अपनी सरलता के कारण उन्होंने कई बार धोखा भी खाया है। वे मज़ाक का कारण नहीं बनाना चाहते| उन्हें लगता है कि उनकी आत्मकथा में कुछ रोचक और प्रेरक नहीं है|

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है ?
उत्तर कवि के अनुसार उन्हें कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त नहीं है| उनका जीवन संघर्षों से भरा पड़ा है| वह अपने अभावग्रस्त जीवन के दु:खों को खुद तक सीमित रखना चाहते हैं इसलिए कवि कहते हैं उनके आत्मकथा लिखने का अभी समय नहीं हुआ है|

प्रश्न 3. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?
उत्तर कवि स्वयं को जीवन-यात्रा से थका हुआ मानता है। जिस प्रकार 'पाथेय' यात्रा में यात्री को सहारा देता है, आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है ठीक उसी प्रकार उसकी पत्नी के साथ बिताए हुए सुख की स्मृति भी कवि को जीवन-मार्ग में आगे बढ़ने का सहारा देती हैं।

4 उत्साह व अट नहीं रही है (कवि- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

उत्साह-

कवि ने बादलों को क्रांतिदूत मानकर सोए, अलसाए, और कर्तव्यविमुख लोगों को क्रांति लाने के लिए प्रेरित किया है। कवि ने बादलों को 'नवजीवन वाले' कहा है क्योंकि वे वर्षा करके मुरझाई-सी धरती में नया जीवन फूंक देते हैं। कवि ने बादलों से कहा है कि वे पूरे आसमान को घेरकर घोर गर्जना करें। कवि का कहना है कि बादल के हृदय में किसी कवि की तरह असीम ऊर्जा भरी हुई है। कवि ने कहा है कि बादल का गरजना क्रांति का सूचक है। कवि ने कहा है कि बादल के गरजने के बाद वर्षा होती है, जिसका मतलब है कि क्रांति का सुखद परिणाम होगा।

प्रश्न 1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?
उत्तर निराला क्रांतिकारी कवि थे| वे समाज में बदलाव लाना चाहते थे इसलिए जनता में चेतना जागृत करने के लिए और जोश जगाने के लिए कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए न कह 'गरजने' के लिए कहा है| गरजना शब्द क्रान्ति, बदलाव, विरोध दर्शाता है|

प्रश्न 2 कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?
उत्तर कवि ने गीत में बादलों के माध्यम से लोगों में उत्साह का सृजन करने को कहा है| वह लोगों को क्रान्ति लाने के लिए उत्साहित करना चाहते हैं इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है|

प्रश्न 3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?
उत्तर कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -
• पानी बरसा कर सबकी प्यास बुझाता है और सुखी बनाता है|
• गर्जन कर क्रांतिकारी चेतना जागृत करता है|
• नवनिर्माण कर नवजीवन प्रदान करता है|

अट नहीं रही है -

'अट नहीं रही है' कविता में फागुन महीने के सौंदर्य का वर्णन है। इस महीने में प्राकृतिक सौंदर्य कहीं भी नहीं समा रहा है और धरती पर बाहर बिखर गया है। इस महीने सुगंधित हवाएँ वातावरण को महका रही हैं। इस समय प्रकृति अपने चरम सौंदर्य पर होती है और मस्ती से इठलाती है। पेड़ों पर आए लाल – हरे पत्ते और फूलों से यह सौंदर्य और भी बढ़ गया है। इससे मन में उमंगें उड़ान भरने लगी हैं। फागुन का सौंदर्य अन्य ऋतुओं और महीनों से बढ़कर होता है। इस समय चारों ओर हरियाली छा जाती है। खेतों में कुछ फसलें पकने को तैयार होती हैं। सरसों के पीले फूलों की चादर बिछ जाती है। लताएँ और डालियाँ रंग – बिरंगे फूलों से सज जाती हैं। प्राणियों का मन उल्लासमय हुआ जाता है। ऐसा लगता है कि इस महीने में प्राकृतिक सौंदर्य छलक उठा है।

प्रश्न 1 कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?
उत्तर कवि की आँख फागुन की सुंदरता से इसलिए हट नहीं रही है क्योंकि इस महीने में प्रकृति का सौंदर्य अत्यंत मनमोहक होता है| पेड़ों पर हरी और लाल पत्तियाँ लटक रहे हैं| चारों ओर फैली हरियाली और खिले रंग-बिरंगे फूल अपनी सुगंध से मुग्ध कर देते हैं| प्रकृति का नया रंग और सुगंध जीवन में नयी ऊर्जा का संचार करती है|

प्रश्न 2 फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?
उत्तर फागुन में प्रकृति की शोभा अपने चरम पर होती है| पेड़-पौधें नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।

5 यह दंतुरित मुसकान व फसल (कवि- नागार्जुन)

यह दंतुरित मुस्कान - कविता के माध्यम से कवि ने उस नन्हे बच्चे की मन को मोह लेने वाली मुस्कान जिसमें कोई छल नहीं है और न ही कोई कपट मात्र है , उस का बहुत खूबसूरती से वर्णन किया है , जिसके अभी – अभी दूध के दांत निकलने शुरू हुए हैं। क्योंकि कवि काफी लम्बे समय के बाद

अपने घर लौटे हैं और उनकी मुलाकात उनके 6 से 8 महीने के बच्चे से पहली बार हो रही हैं। इसीलिए कवि अपने उस नन्हे बच्चे की मन को मोह लेने वाली मुस्कान को देखकर वे कहते हैं कि अगर उसकी इस मुस्कान को कोई पत्थर हृदय वाला व्यक्ति भी देख ले तो , वह भी उसे प्यार किए बिना नहीं रह पाएगा और बच्चे की यह मन को मोह लेने वाली मुस्कान जीवन की कठिनाइयों व परेशानियों से निराश – हताश हो चुके व्यक्तियों को भी एक नई प्रेरणा दे सकती हैं।

प्रश्न 1 बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?
उत्तर- बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में बहुत अंतर होता है। बच्चे की मुसकान अत्यंत सरल, निश्छल, भोली और स्वार्थरहित होती है। इस मुसकान में स्वाभाविकता होती है। इसके विपरीत एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में स्वार्थपरता तथा बनावटीपन होता है। वह तभी मुसकराता है जब उसका स्वार्थ होता है। इसमें कुटिलता देखी जा सकती है जबकि बच्चे की मुसकान में सरलता दिखाई देती है।

प्रश्न 2 मृतक में भी डाल देगी जान' का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- शिशु की नवोदित दाँतों वाली सुंदर मुसकान व्यक्ति के हृदय में सरसता उत्पन्न कर देती है। इससे थक-हारकर निराश और निष्प्राण हो चुका व्यक्ति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। ऐसे व्यक्ति के मन में भी कोमल भावों का उदय होता है और वह शिशु को देखकर हँसने-मुसकराने के लिए बाध्य हो जाता है।

प्रश्न 3 पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर- 'पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि शिशु की नवोदित मुसकान अत्यंत मनोहारी होती है। इससे प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता है। इस मुसकान के वशीभूत होकर पत्थर जैसा कठोर हृदय वाला व्यक्ति भी पिघलकर पानी की तरह हो जाता है।

फसल-

अलग – अलग नदियों का पानी जब भाप बनकर उड़ता है तो वो आकाश में बादल के रूप में परिवर्तित हो जाता है। और फिर वही बादल बरस कर धरती पर पानी के रूप में वापस आ जाते हैं। जिससे फसलों को भरपूर पनपने का मौका मिलता हैं। फसल को तैयार होने में किन – किन चीज़ों की आवश्यकता होती है , उनका वर्णन कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि एक या दो नहीं बल्कि अनेक नदियों का पानी अपना जादुई असर दिखाता है , तब जाकर फसल पैदा होती हैं। एक नहीं दो नहीं बल्कि लाखों – करोड़ों हाथों के अथक परिश्रम का परिणाम से एक अच्छी फसल तैयार होती है। अर्थात हजारों खेतों पर दुनिया भर के लाखों – करोड़ों किसान दिन रात मेहनत करते हैं। एक या दो नहीं बल्कि हजारों खेतों की उपजाऊ मिट्टी के पोषक तत्व भी इन फसलों के अंदर छुपे हुए हैं।

प्रश्न 1 फ़सल उगाने में किसानों के योगदान को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- फ़सल उगाने में प्रकृति के विभिन्न तत्व हवा, पानी, मिट्टी अपना योगदान देते हैं, परंतु किसानों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। सारी परिस्थितियाँ फ़सल उगाने योग्य होने पर भी किसान के अथक श्रम के बिना फ़सल तैयार नहीं हो सकती है। इससे स्पष्ट है कि किसानों का योगदान सर्वाधिक है।

प्रश्न 2 कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?
उत्तर कविता में फसल उपजाने के लिए निम्नलिखित आवश्यक तत्वों की बात कही गई है -
• मनुष्य का परिश्रम • पानी • मिट्टी • धूप • हवा

6 संगतकार (कवि - मंगलेश डबराल)

इस कविता में कवि ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की महत्ता को स्पष्ट किया है। कवि कहते हैं कि मुख्य गायक के गंभीर आवाज़ का साथ संगतकार अपनी कमजोर किन्तु मधुर आवाज़ से देता है। अधिकांशत ये मुख्य गायक का छोटा भाई, चेला या कोई रिश्तेदार होता है

जो की शुरू से ही उसके साथ आवाज़ मिलाता आ रहा है। जब मुख्य गायक गायन करते हुए सुरों की मोहक दुनिया में खो जाता है, उसी में रम जाता है तब संगतकार ही स्थायी इस प्रकार गाकर समां बांधे रखता है जैसे वह कोई छूटा हुआ सामान सँजोकर रख रहा हो। वह अपनी टेक से गायक को यह उन दिनों की याद दिलाता है जब उसने सीखना शुरू किया था।

प्रश्न 1 संगतकार किन्हें कहा जाता है?
उत्तर- संगतकार उन व्यक्तियों को कहा जाता है जो मुख्य गायक के सहायक होते हैं। वे मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसके गायन को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। वास्तव में संगतकारों के बिना मुख्य गायक की सफलता की कल्पना नहीं की जा सकती है।
प्रश्न 2. संगतकार कभी-कभी यूँ ही मुख्य गायक का साथ क्यों देता है?
उत्तर- संगतकार कभी-कभी यूँ ही मुख्य गायक का साथ इसलिए देता है क्योंकि मुख्य गायक को यह लगे कि वह अकेला नहीं है। उसका साथ देने के लिए संगतकार भी है। ऐसा करके वह मुख्य गायक के उत्साह को कम नहीं होने देता है।

प्रश्न 3 संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?
उत्तर संगतकार निम्नलिखित रूपों में संगतकार की मदद करते हैं -
• वे अपनी आवाज़ और गूँज को मुख्य गायक की आवाज़ में मिलाकर उनकी आवाज़ का बल बढ़ाने का काम करते हैं|
• जब मुख्य गायक गायन की गहराई में चले जाते हैं तब वे स्थायी पंक्ति को पकड़कर मुख्य गायक को वापस मूल स्वर में लाते हैं|
• वे मुख्य गायक की थकी, टूटती-बिखरती आवाज़ को बल देकर उसे अकेला होने या बिखरने से बचाते हैं|

1 नेताजी का चश्मा (लेखक - स्वयं प्रकाश)

इस कहानी में देशभक्ति की भावना को दिखाया गया है। कहानी में एक कस्बे के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति लगी हुई है। हालदार साहब हर 15 दिनों में उस कस्बे से गुज़रते हैं और देखते हैं कि नेताजी की आंखों पर हर बार एक नया चश्मा लगा होता है। यह काम कैप्टन चश्में वाला करता था। एक दिन हालदार साहब को पता चलता है कि कैप्टन चश्मे वाला मर गया है। हालदार साहब दुखी हो जाते हैं और सोचते हैं कि उस पीढ़ी का क्या होगा जो अपने देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने वालों पर हंसती है। 15 दिन बाद जब हालदार साहब फिर से उसी कस्बे से गुज़रते हैं, तो वे देखते हैं कि मूर्ति पर सरकंडे से बना चश्मा लगा है जो कि बच्चों द्वारा लगाया गया होगा यह देखकर हलदर साहब खुश होते हैं की बच्चों के मन में भी देशभक्तों के प्रति सम्मान है और हमारे देश का भविष्य सुरक्षित हाथों में है।

प्रश्न 1 कैप्टन मूर्ति के चश्मे को बार-बार क्यों बदल दिया करता था?
उत्तर- कैप्टन देशभक्त तथा शहीदों के प्रति आदरभाव रखने वाला व्यक्ति था। वह नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति देखकर दुखी होता था। वह मूर्ति पर चश्मा लगा देता था पर किसी ग्राहक द्वारा वैसा ही चश्मा माँगे जाने पर उतारकर उसे दे देता था और मूर्ति पर दूसरा चश्मा लगा दिया करता था।

प्रश्न 2. 'नेताजी का चश्मा' पाठ के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?
उत्तर- 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ के माध्यम से लेखक ने देशवासियों विशेषकर युवा पीढ़ी को राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति की भावना मजबूत बनाए रखने के साथ-साथ शहीदों का सम्मान करने का भी संदेश दिया है। देशभक्ति का प्रदर्शन देश के सभी नागरिक अपने-अपने ढंग से कार्य-व्यवहार से कर सकते हैं।

प्रश्न 3 बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या प्रदर्शित करता है?
उत्तर- बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाना यह प्रदर्शित करता है कि बच्चों के मन में देश प्रेम और देशभक्ति के बीज अंकुरित हो गए हैं। उन्हें यह ज्ञान हो गया है कि शहीदों और देशभक्तों का आदर करना चाहिए।

2 बालगोबिन भगत (लेखक - रामवृक्ष बेनीपुरी)

बालगोबिन भगत एक कबीरपंथी गृहस्थ संत थे। वे झूठ, छल, प्रपंच से दूर रहते थे और अपने गायन से लोगों को आनंदित करते थे।उनके जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि अपने व्यक्तित्व को मज़बूत बनाना चाहिए। वे खेतिहर गृहस्थ थे। झूठ ,छल प्रपंच से दूर रहते,दो टूक बाते करते। कबीर को अपना आदर्श मानते थे। उन्ही के गीतों को गाते। कबीर पंथी मठ में ले जाकर अपने खेतों की सारी उपज दे आते और वहाँ से जो मिलता ,उसी से अपना गुजर बसर करते। उनकी भक्ति साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखने को मिला जिस दिन उनका एक मात्र पुत्र मरा। वे रुदन के बदले उत्सव मनाने को कहते थे। उनका मानना था कि आत्मा - परमात्मा से मिल गयी है। विरहणी अपनी प्रेमी से जा मिली। वे आगे एक समाज सुधारक के रूप में सामने आते हैं। अपनी पतोहू द्वारा अपने बेटे को मुखाग्नि दिलाते हैं। श्राद्ध कर्म के बाद ,बहु के भाई को बुलाकर उसकी दूसरी शादी करने को कहते हैं। बहु के बहुत मिन्नतें करने पर भी वे अटल रहते हैं। इस प्रकार वे विधवा विवाह के समर्थक हैं।

प्रश्न 1 आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?
उत्तर- मेरी दृष्टि में भगत की कबीर पर श्रद्धा के अनेक कारण रहे होंगे–
(i) कबीर भी घर-परिवार के साथ रहते हुए साधुओं जैसा जीवन बिताते थे।
(ii) कबीर बाह्याडंबरों से दूर रहकर सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करने वाले थे। यह भगत को पसंद आया होगा।
(iii) कबीरदास का 'सादा जीवन उच्च विचार' भगत को पसंद आया होगा।
(iv) भगत को कबीर का खरा-खरा व्यवहार करना बहुत पसंद आया होगा।

प्रश्न 2 बालगोबिन भगत के संगीत को जादू क्यों कहा गया है?
उत्तर- बालगोबिन भगत का संगीत हर आयुवर्ग के लोगों पर समान रूप से असर करता था। उनका स्वर अचानक एक मधुर स्वर तरंग झंकृत-सी हो उठती है। उनके मधुर गान को सुनकर बच्चे झूम उठते थे, मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ गुनगुना उठते थे, हलवाहों के पैर ताल से उठने से लगते थे और रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ क्रम से चलने लगती थीं।

प्रश्न 3 पुत्र की मृत्यु के अवसर पर भगत अपनी पतोहू को परंपरा से हटकर कौन-सा कार्य करने को कह रहे थे और क्यों?
उत्तर- पुत्र की मृत्यु के अवसर पर भगत तल्लीनता से गाए जा रहे थे और उनकी पतोहू विलाप कर रही थी। इसी समय भगत अपनी पतोहू से रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। भगत ऐसा इसलिए कह रहे थे क्योंकि उनका मानना था कि मृत्यु | खुशी का अवसर है। इस समय आत्मा और परमात्मा का मिलन हो जाता है।

प्रश्न 4 बालगोबिन भगत ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए क्या किया?
उत्तर- बालगोबिन भगत ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए दो कार्य किया
(i)उन्होंने अपने पुत्र को अपनी पतोहू से मुखाग्नि दिलाकर महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाने का प्रयास किया।
(ii) अपने पुत्र की मृत्यु के बाद पतोहू के भाई को बुलवाकर आदेशात्मक स्वर में कहा, "इसकी दूसरी शादी कर देना"। इस प्रकार विधवा विवाह के माध्यम से उन्होंने नारियों की सामाजिक स्थिति को सुधारना चाहा।

3 लखनवी अंदाज (लेखक - यशपाल)

इस पाठ में लेखक यशपाल ने लखनऊ के नवाबों के दिखावेपूर्ण अंदाज़ का वर्णन किया है। लेखक ने इस पाठ के ज़रिए दिखावे करने वाले लोगों की जीवनशैली पर प्रकाश डाला है। इस पाठ में लेखक ने यह संदेश दिया है कि हमें दिखावे से दूर रहना चाहिए और वर्तमान के कठोर यथार्थ का सामना करना चाहिए। लेखक ने यह भी बताया कि जिस प्रकार केवल गंध व काल्पनिक स्वाद से पेट नहीं भर सकता उसी प्रकार बिना किसी घटना, पात्र व विचार के कहानी लिखना संभव नहीं है।

प्रश्न 1 नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर- नवाब साहब ने यत्नपूर्वक खीरा काटकर नमक-मिर्च छिड़का और सँधकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। उनका ऐसा करना उनकी नवाबी ठसक दिखाता है। वे लोगों के कार्य व्यवहार से हटकर अलग कार्य करके अपनी नवाबी दिखाने की कोशिश करते हैं। उनका ऐसा करना उनके अमीर स्वभाव और नवाबीपन दिखाने की प्रकृति या स्वभाव को इंगित करता है।

प्रश्न 2 बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?
उत्तर- लेखक का मानना है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है अर्थात विचार, घटना और पात्र के बिना कहानी नहीं लिखी जा सकती है। मैं लेखक के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ। वास्तव में कहानी किसी घटना विशेष का वर्णन ही तो है। इसका कारण क्या था, कब घटी, परिणाम क्या रहा तथा इस घटना से कौन-कौन प्रभावित हुए आदि का वर्णन ही कहानी है। अतः किसी कहानी के लिए विचार, घटना और पात्र बहुत ही आवश्यक हैं।

प्रश्न 3 लेखक ने ऐसा क्या देखा कि उसके ज्ञान चक्षु खुल गए?
उत्तर- लेखक ने देखा कि नवाब साहब खीरे की नमक-मिर्च लगी फाँकों को खाने के स्थान पर सूँघकर खिड़की के बाहर फेंकते गए। बाद में उन्होंने डकार लेकर अपनी तृप्ति और संतुष्टि दर्शाने का प्रयास किया। यही देखकर लेखक के ज्ञान-चक्षु खुल गए कि इसी तरह बिना घटनाक्रम, पात्र और विचारों के कहानी भी लिखी जा सकती है।

4 एक कहानी यह भी (लेखिका - मन्नू भंडारी)

प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों को उभारा है।आरम्भ में लेखिका के पिता इंदौर में रहते थे, वहाँ संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। काँग्रेस से जुड़े होने के साथ वे समाज सेवा से भी जुड़े थे परन्तु किसी के द्वारा धोखा दिए जाने पर वे आर्थिक मुसीबत में फँस गए और अजमेर आ गए। अपने जमाने के अलग तरह के अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष को पूरा करने बाद भी जब उन्हें धन नही मिला तो सकरात्मकता घटती चली गयी। वे बेहद क्रोधी, जिद्दी और शक्की हो गए, जब तब वे अपना गुस्सा लेखिका के बिन पढ़ी माँ पर उतारने के साथ-साथ अपने बच्चों पर भी उतारने लगे। पांच भाई-बहनों में लेखिका सबसे छोटी थीं। काम उम्र में उनकी बड़ी बहन की शादी होने के कारण लेखिका के पास ज्यादा उनकी यादें नही थीं। लेखिका काली थीं तथा उनकी बड़ी बहन सुशीला के गोरी होने के कारण पिता हमेशा उनकी तुलना लेखिका से किया करते तथा उन्हें नीचा दिखाते। इस हीनता की भावना ने उनमें विशेष बनने की लगन उत्पन्न की परन्तु लेखकीय उपलब्धियाँ मिलने पर भी वह इससे उबर नही पाई। सावित्री गर्ल्स कॉलेज के प्रथम वर्ष में हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका में न केवल हिंदी साहित्य के प्रति रूचि जगाई बल्कि साहित्य के सच को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित भी किया। सन 1946-1947 के दिनों में लेखिका ने घर से बाहर निकलकर देशसेवा में सक्रिय भूमिका निभाई।

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?
उत्तर- लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्यतया दो लोगों का प्रभाव पड़ा, जिन्होंने उसके व्यक्तित्व को गहराई तक प्रभावित किया। ये दोनों लोग हैं
पिता का प्रभाव : लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों रूपों में प्रभाव पड़ा। वे लेखिका की तुलना उसकी बहन सुशीला से करते थे जिससे लेखिका के मन में हीन भावना भर गई। इसके अलावा उन्होंने लेखिका को राजनैतिक परिस्थितियों से अवगत कराया तथा देश के प्रति जागरूक करते हुए सक्रिय भागीदारी निभाने के योग्य बनाया।
प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव : लेखिका के व्यक्तित्व को उभारने में शीला अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान : था। उन्होंने लेखिका की साहित्यिक समझ का दायरा बढ़ाया और अच्छी पुस्तकों को चुनकर पढ़ने में मदद की। इसके अलावा उन्होंने लेखिका में वह साहस एवं आत्मविश्वास भर दिया जिससे उसकी रगों में बहता खून लावे में बदल गया।

प्रश्न 2 उन कारणों का उल्लेख कीजिए जिनके कारण वह अपनी माँ को आदर्श नहीं बना सकी?
उत्तर- लेखिका की माँ ने अपने आप को परिवार की भलाई में समर्पित कर दिया था। उनका अपना कोई व्यक्तित्व न था। वे बच्चों की उचित-अनुचित माँग को पूरा करते हुए तथा पति के अत्याचार को सहन करते हुए जी रही थी। इसके अलावा निम्नलिखित कारणों से लेखिका उन्हें अपना आदर्श नहीं बना पा रही थी
(i) वे अनपढ़ थीं।
(ii) उनका अपना कोई व्यक्तित्व न था।

(iii) उनका त्याग मजबूरी में लिपटा हुआ था।

प्रश्न 3 लेखिका का अपने पिता के साथ टकराव क्यों चलता रहा? यह टकराव कब तक चलता रहा?
उत्तर- लेखिका का अपने पिता के साथ इसलिए टकराव चलता रहा क्योंकि लेखिका के पिता विशिष्ट बनना-बनाना तो चाह रहे। थे, परंतु वे लेखिका की स्वतंत्रता घर की चारदीवारी तक ही सीमित रखना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि मन्नू सड़कों पर नारे लगवाए, लड़कों के साथ हड़तालें करवाए और दुकान बंद कराती एवं सड़कों पर भाषण देती फिरे। अपने पिता के साथ उसका यह टकराव राजेंद्र से शादी होने तक चलता रहा।

5 नौबतखाने में इबादत (लेखक- यतींद्र मिश्र)

अम्मीरुद्दीन उर्फ़ बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्लाह खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहां जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया की बचपन में इनलोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी।बिस्मिल्लाह खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के वाबजूद हमेशा पाँचो वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्लाह खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते।बिस्मिल्लाह खाँ जब काशी के बाहर भी रहते तब भी वो विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की तरफ मुँह करके बैठते और अपनी शहनाई भी उस तरफ घुमा दिया करते। गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे।

प्रश्न 1 शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?
उत्तर मशहूर शहनाई वादक "बिस्मिल्ला खाँ" का जन्म डुमराँव गाँव में ही हुआ था। इसके अलावा शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। रीड, नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यत: सोन नदी के किनारे पाई जाती है। इसी कारण शहनाई की दुनिया में डुमराँव का महत्त्व है।

प्रश्न 2 सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?
उत्तर सुषिर-वाद्यों से अभिप्राय है फूँककर बजाये जाने वाले वाद्य। शहनाई एक अत्यंत मधुर स्वर उत्पन्न करने वाला वाद्ध है। फूँककर बजाए जाने वाले वाद्यों में कोई भी वाद्य ऐसा नहीं है जिसके स्वर में इतनी मधुरता हो। शहनाई में समस्त राग-रागिनियों को आकर्षक सुरों में बाँधा जा सकता है। इसलिए शहनाई की तुलना में अन्य कोई सुषिर-वाद्य नहीं टिकता और शहनाई को 'सुषिर-वाद्यों के शाह' की उपाधि दी गयी होगी।

प्रश्न 3 आशय स्पष्ट कीजिए -
(क) 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।
उत्तर यहाँ बिस्मिल्ला खाँ ने सुर तथा कपड़े (धन-दौलत) से तुलना करते हुए सुर को अधिक मूल्यवान बताया है क्योंकि कपड़ा यदि एक बार फट जाए तो दुबारा सिल देने से ठीक हो सकता है। परन्तु किसी का फटा हुआ सुर कभी ठीक नहीं हो सकता है। और उनकी पहचान सुरों से ही थी इसलिए वह यह प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें अच्छा कपड़ा अर्थात् धन-दौलत दें या न दें लेकिन अच्छा सुर अवश्य दें।

प्रश्न 4 बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?
उत्तर बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की निम्नलिखित बातें हमें प्रभावित करती हैं -
1. ईश्वर के प्रति उनके मन में अगाध भक्ति थी।
2. मुस्लिम होने के बाद भी उन्होंने हिंदु धर्म का सम्मान किया तथा हिंदु-मुस्लिम एकता को कायम रखा।
3. भारत रत्न की उपाधि मिलने के बाद भी उनमें घमंड कभी नहीं आया।
4. वे एक सीधे-सादे तथा सच्चे इंसान थे।
5. उनमें संगीत के प्रति सच्ची लगन तथा सच्चा प्रेम था।
6. वे अपनी मातृभूमि से सच्चा प्रेम करते थे।

6 संस्कृति (लेखक - भदंत आनंद कौसल्यायन)

लेखक संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्थापित करने के लिए आग और सुई-धागे के आविष्कार से जुड़ी प्रारंभिक प्रयत्नशीलता और बाद में हुई उन्नति के उदाहरण देते हैं।अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोज आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। मानव हित में काम ना करने वाली संस्कृति का नाम असंस्कृति है। इसे संस्कृति नहीं कहा जा सकता। यह निश्चित ही असभ्यता को जन्म देती है। मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का ही नाम संस्कृति है।

प्रश्न 1 वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकना है?
उत्तर- वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति उसे कहा जा सकता है जो अपना पेट भरा होने तथा तन ढंका होने पर भी निठल्ला नहीं बैठता है। वह अपने विवेक और बुद्धि से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है और समाज को अत्यंत उपयोगी आविष्कार देकर उसकी सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरणार्थ न्यूटन संस्कृत व्यक्ति था जिसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। इसी तरह सिद्धार्थ ने मानवता को सुखी देखने के लिए अपनी सुख-सुविधा छोड़कर जंगल की ओर चले गए।

प्रश्न 2 संस्कृति और सभ्यता क्या हैं?
उत्तर- संस्कृति एक संस्कृत मनुष्य की वह योग्यता प्रेरणा अथवा प्रवृत्ति है जिसके बल पर वह किसी नए तथ्य का दर्शन करता है। इस संस्कृति के द्वारा समाज के लिए कल्याणकारी आविष्कार कर जाता है जो मनुष्य को सभ्य बनने में सहायता करता है वही सभ्यता है।

प्रश्न 3 न्यूटन से भी अधिक ज्ञान रखने वाले और उन्नत जीवन शैली अपनाने वाले को संस्कृत कहेंगे या सभ्य और क्यों?
उत्तर- न्यूटन से भी अधिक ज्ञान रखने वाले और उन्नत जीवन शैली अपनाने वाले व्यक्ति को सभ्य कहा जाएगा क्योंकि ऐसा व्यक्ति न्यूटन द्वारा आविष्कृत गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के अलावा भले ही बहुत कुछ जानता हो पर उसने किसी नए तथ्य का आविष्कार नहीं किया है, बल्कि दूसरों के आविष्कारों का प्रयोग करते-करते सभ्य बन गया है।

कृतिका भाग -2

1 माता का अंचल (शिवपूजन सहाय)

'देहाती दुनिया' उपन्यास से लिए गए इस अंश में ग्रामीण संस्कृति की झांकी उकेरी गई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न चरित्रों तथा बच्चों के शैशव - काल के अनेक क्रियाकलापों का अत्यंत मनोहरी ढंग से चित्रण किया गया है। पाठ में भोलानाथ के चरित्र के माध्यम से माता- पिता का स्नेह और दुलार, बालकों के विभिन्न ग्रामीण खेल, लोकगीत और बच्चों की मस्ती एवं शैतानियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें इस तथ्य को भी स्पष्ट किया गया है कि बच्चे का मां से अधिक जुड़ाव होता है। भले ही वह अपने पिता के साथ अधिक समय बिताए, किंतु परेशानी के समय उसे मां का आंचल ही शांति देता है। आत्मकथात्मक शैली में रचे गए इस उपन्यास का कथा - शिल्प अत्यंत मौलिक एवं प्रयोगधर्मी है।

प्रश्न 1..आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?
उत्तर- शिशु अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रुचि लेता है। उनके साथ खेलना अच्छा लगता है। अपनी उम्र के साथ जिस रुचि से खेलता है वह रुचि बड़ों के साथ नहीं होती है। दूसरा कारण मनोवैज्ञानिक भी है-बच्चे को अपने साथियों के बीच सिसकने या रोने में हीनता का अनुभव होता है। यही कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 2 .बच्चे रोना-धोना, पीड़ा, आपसी झगड़े ज्यादा देर तक अपने साथ नहीं रख सकते हैं। 'माता के अँचल' पाठ के आधार पर बच्चों की स्वाभाविक विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- बच्चे मन के सच्चे होते हैं। वे आपसी झगड़े, रोना-धोना, कष्ट की अनुभूति आदि जितनी जल्दी करते हैं उतनी ही जल्दी भूल जाते हैं। वे आपस में फिर इस तरह घुल-मिल जाते हैं, जैसे कुछ हुआ ही न हो। 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों के सरल तथा निश्छल स्वभाव का पता चलता है। वे लड़ाई-

झगड़े की कटुता को अधिक देर तक अपने मन में नहीं रख सकते हैं। खेल-खेल में रो देना या हँस देना उनके लिए आम बात है। अपने मनोरंजन के लिए वे किसी को चिढ़ाने से। भी नहीं चूकते हैं। सुख-दुख से बेपरवाह हो वे अपनी ही दुनिया में मगन रहते हैं।

प्रश्न 3.भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर-भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री से हमारे खेल और खेल सामग्रियों में कल्पना से अधिक अंतर आ गया है। भोलानाथ के समय में परिवार से लेकर दूर पड़ोस तक आत्मीय संबंध थे, जिससे खेलने की स्वच्छंदता थी। बाहरी घटनाओं-अपहरण आदि का भय नहीं था। खेल की सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी, जिससे किसी प्रकार ही हानि की संभावना नहीं थी। धूल- मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी। न कोई रोक, न कोई डर, न किसी का निर्देशन । आज भोलानाथ के समय से सर्वथा भिन्न खेल और खेल सामग्री और ऊपर से बड़ों का निर्देशन और सुरक्षा हर समय सिर पर हावी रहता है। आज खेल सामग्री स्वनिर्मित न होकर बाज़ार से खरीदी हुई होती है। खेलने की समय-सीमा भी तय कर दी जाती है। अतः स्वच्छंदता नहीं होती है। धूल-मिट्टी से बच्चों का परिचय ही नहीं होता है।

प्रश्न 4.इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।
उत्तर-ग्रामीण संस्कृति में आए परिवर्तन के कारण वे दृश्य नहीं दिखाई देते हैं जो तीस के दशक में रहे होंगे-
आज घर सिमट गए हैं। घरों के आगे चबूतरों का प्रचलन समाप्त हो गया है। आज परिवारों में एकल संस्कृति ने जन्म ले लिया, जिससे समूह में बच्चे अब दिखाई नहीं देते। आज बच्चों के खेलने की सामग्री और खेल बदल चुके हैं। खेल खर्चीले हो गए हैं। जो परिवार खर्च नहीं कर पाते हैं वे बच्चों को हीन-भावना से बचाने के लिए समूह में जाने से रोकते हैं। आज की नई संस्कृति बच्चों को धूल-मिट्टी से बचना चाहती है।

2 साना- साना हाथ जोड़ि (मधु कांकरिया)

पाठ में पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गैंगटांक और हिमालय की यात्रा का वर्णन है। लेखिका मधु कांकरिया ने हिमालय के अनुपम सौंदर्य के साथ ही वहाँ के निवासियों के परिश्रम,अभाव और जीवन की विषमताओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। महानगरों की भाव-शून्यता और यंत्रवत जीवन के बीच यह यात्रा वृतांत प्रकृति के मनोरम रूप की झाँकी प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 1. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?
उत्तर-श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं। किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए नगर से बाहर किसी वीरान स्थान पर मंत्र लिखी एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती हैं, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे अपने-आप नष्ट हो जाती हैं। किसी शुभ कार्य को आरंभ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

प्रश्न 2. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?
उत्तर-लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्म-चक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है। उसे लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है। सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनकी आस्थाएँ, विश्वास, अंध-विश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक-सी हैं।

प्रश्न 3."कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?
उत्तर-किसी देश की आमजनता देश की आर्थिक प्रगति में बहुत अधिक अप्रत्यक्ष योगदान देती है। आम जनता के इस वर्ग में मज़दूर ड्राइवर, बोझ उठाने वाले, फेरीवाले, कृषि कार्यों से जुड़े लोग आते हैं। अपनी यूमथांग की यात्रा में लेखिका ने देखा कि पहाड़ी मजदूर औरतें पत्थर तोड़कर पर्यटकों के आवागमन के लिए रास्ते बना रही हैं। इससे यहाँ पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी जिसका सीधा-सा असर देश की प्रगति पर पड़ेगा। इसी प्रकार कृषि कार्यों में शामिल मजदूर, किसान फ़सल उगाकर राष्ट्र की प्रगति में अपना बहुमूल्य योगदान देते हैं।

प्रश्न 4. सेवन सिस्टर्स वाटर फॉल' को लेखिका ने किसका प्रतीक माना? उसका सौंदर्य देख लेखिका कैसा महसूस करने लगी?
उत्तर-'सेवन सिस्टर्स वाटर फॉल' को लेखिका जीवन की अनंतता का प्रतीक मान रही थी। लेखिका को उस झरने से जीवन-शक्ति का अहसास हो रहा था। इसका सौंदर्य देख लेखिका को ऐसा लग रहा था जैसे वह स्वयं देश और काल की सीमाओं से दूर बहती धारा बनकर बहने लगी है। उसकी मन की तामसिकता इस निर्मल धारा में बह गई है। वह अनंत समय तक ऐसे बहते रहना चाहती है और झरने की पुकार सुनना चाहती है।

3 मैं क्यों लिखता हूँ'? (सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय')

"मैं क्यों लिखता हूँ" निबंध सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय' जी द्वारा लिखित रचना है। हिंदी में एक बार इस विषय पर चर्चा हुई कि लेखक क्यों, किसके लिए और किस प्रयोजन से लिखता है? 'अज्ञेय' जी का निबंध भी उसी बहस से जुड़ा है। उन्होंने इस निबंध में बताया है कि रचनाकार की भीतरी विवशता ही उसे लेखन के लिए बाध्य करती है और लिखकर ही लेखक उससे मुक्त हो पाता है।'अज्ञेय' जी का मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव जब अनुभूति का रूप धारण करता है, तभी किसी रचना की उत्पत्ति होती है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक अनुभव अनुभूति बने।लेखक ने जब हिरोशिमा के अस्पतालों में जाकर 'रेडियम पदार्थ' से आहत उन लोगों को देखा जो वहाँ वर्षों से कष्ट भोग रहे थे तो उसने उनकी पीड़ा का प्रत्यक्ष अनुभव किया। किन्तु पत्थर पर किसी मनुष्य की उज़ली छाया देखकर उसे उस अनुभव की अनुभूति हुई। अनुभव जब भाव-जगत और संवेदना का हिस्सा बनता है तभी उसकी कलात्मक अनुभूति में परिणति होती है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने अपनी 'हिरोशिमा' कविता का उदाहरण भी दिया है।

प्रश्न 1. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ किस तरह से हो रहा है।
उत्तर - आजकल विज्ञान का दुरुपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसार-भर में मनचाहे विस्फोट कर रहे हैं। कहीं अमरीकी टावरों को गिराया जा रहा है। कहीं मुंबई बम-विस्फोट किए जा रहे हैं। कहीं गाड़ियों में आग लगाई जा रही है। कहीं शक्तिशाली देश दूसरे देशों को दबाने के लिए उन पर आक्रमण कर रहे हैं। विज्ञान के दुरुपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़ककर अपनी फसलों को बढ़ा रहे हैं।

प्रश्न 2. लेखक अज्ञेय जी ने प्रत्यक्ष अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर बताया है?
उत्तर- लेखक अज्ञेय जी ने प्रत्यक्ष अनुभव और अनुभूति में अंतर बताते हुए कहा है कि अनुभव तो घटित का होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उसे सत्य को आत्मसात कर लेता है जो कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ है। जो आँखों के सामने नहीं आया, जो घटित के अनुभव में नहीं आया, वही आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है, तब वह अनुभूति-प्रत्यक्ष हो जाती है।

प्रश्न 3. लेखक ने हिरोशिमा में पत्थर पर लिखी कौन-सी ट्रेजिडी देखी?
उत्तर-हिरोशिमा में घूमते हुए एक दिन लेखक ने देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक उजली छाया है। उसने अनुमान लगाया कि जिस समय हिरोशिमा में विस्फोट हुआ उस समय वहाँ पत्थर के पास कोई खड़ा रहा होगा। अणुबम की रेडियोधर्मी तरंगों ने पत्थर को जला दिया पर जो किरणें (तरंगें) व्यक्ति में अवरुद्ध हो गई थीं उन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा जिसकी छाया पत्थर पर अंकित हो गई। इस तरह लेखक ने हिरोशिमा में पत्थर पर मानवता के विनाश की ट्रेजिडी देखी।

लेखन भाग

अनुच्छेद लेखन के चरणबद्ध तरीके

(1) दिए गए शीर्षक का अध्ययन- अनुच्छेद लेखन सर्वप्रथम चरण शीर्षक का गंभीरता पूर्वक अध्ययन किया जाना चाहिए।
(2) संकेत बिंदुओं को समझना- परीक्षा में पूछे गए अनुच्छेद लेखन से संबंधित संकेत बिंदुओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके उनका उचित प्रयोग अनुच्छेद लेखन में करना चाहिए।
(3) अनुच्छेद लेखन का प्रारूप अथवा रूपरेखा तैयार करना- अनुच्छेद लेखन करने से पहले रूपरेखा का निर्धारण करना चाहिए, उसके बाद अनुच्छेद लेखन की शुरुआत करनी चाहिए।
(4) क्रमबद्धता- अनुच्छेद लेखन में विषय-केंद्रित होकर विषय-वस्तु को क्रम में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिससे विचारों में बिखराव नहीं आता।
(5) शब्द चयन एवं भाषा शैली- अच्छे अनुच्छेद लेखन की विशेषता होती है, उसमें प्रयुक्त शब्दों एवं भाषा का प्रयोग करना। अनुच्छेद लेखन के समय शब्दों का चुनाव एवं भाषा शुद्ध होनी चाहिए।

(6) शब्द सीमा- परीक्षा में पूछे गए अनुच्छेद लेखन का महत्वपूर्ण चरण शब्द सीमा का पालन करना चाहिए। अनुच्छेद लेखन ज्यादा छोटा या ज्यादा बड़ा नहीं होना चाहिए।

(7) मुहावरे एवं सूक्तियों का प्रयोग- मुहावरे,सूक्तियों एवं महापुरूषों के कथनों का प्रयोग आवश्यकतानुसार ही अनुच्छेद लेखन में किया जाना चाहिए।

(8) उपसंहार अथवा निष्कर्ष- अनुच्छेद लेखन का अंतिम चरण उपसंहार है। अनुच्छेद लेखन का अंत उपयुक्त सार द्वारा किया जाना चाहिए।

(9) अनुच्छेद लेखन को उचित प्रकार अनुच्छेदों में बाँटकर विषय-वस्तु को छोटे-छोटे वाक्यों व सरल शब्दों में लिखना चाहिए।

(10) वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्दों का एवं उचित स्थानों पर विराम चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए।

(11) क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग न कर सरल भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(12) इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि संकेत बिंदु परीक्षा में दिए गए हैं उनका पालन उचित प्रकार किया जा रहा है या नहीं।

(13) अनुच्छेद लेखन में प्रयोग किया जा रहे शब्दों में सजीवता,सहजता का गुण होना चाहिए।

(14) समय सीमा का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

(15) अनुच्छेद लेखन में लंबी कहानियां एवं विवरण से बचना चाहिए।

(16) अधिक लंबे वाक्यों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(17) उचित स्थान पर संदर्भों एवं कथनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। अप्रासंगिक संदर्भों के प्रयोग से बचना चाहिए।

(18) अनुच्छेद लेखन अति महत्त्वपूर्ण प्रश्न है एवं सबसे अधिक अंक 6 का है। इसलिए इसे अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए।

उदाहरण स्वरूप अनुच्छेद लेखन

बाल-श्रम एक सामाजिक अभिशाप

संकेत-बिंदु

1 भूमिका 2 बाल-श्रम के कारण 3 बाल-श्रम रोकने के उपाय एवं प्रयास 4 उपसंहार

1 <u>भूमिका</u>

"जिनको जाना था यहां पढ़ने को स्कूल,
जूतों पर पॉलिश करें वो भविष्य के फूल।"

कवि गोपाल दास "नीरज" की ये पंक्तियां बाल-श्रम से जुड़े अभिशाप को व्यक्त करती है,जिसने शहरों ,गांव में हर तरफ अपना मकड़जाल बिछाया हुआ है। खेलने-कूदने की उम्र में बच्चा श्रम करने के लिए विवश हो जाए,इससे अधिक विडंबना एक विकसित होते समाज के लिए और क्या हो सकती है? बाल-श्रम एक बहुत ही गंभीर समस्या है, यह मानवाधिकारों का हनन है।

2 <u>बाल-श्रम के कारण</u>

भारत जैसे विशाल देश के लगभग 40% से भी अधिक लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन बिताने के लिए मजबूर है। यहां अभिभावकों द्वारा धनाभाव को दूर करने के लिए अपने बच्चों को शिक्षा व खेलकूद से वंचित कर श्रम करने के लिए मजबूर किया जाता है। कड़कडाती ठंड हो,भीषण गर्मी या बरसात हो छोटे बच्चे कैंटीन, रेस्टोरेंट, रासायनिक कारखानों, चूड़ी बनाने वाले कारखानों आदि स्थानों पर काम करते हुए दिखाई देते हैं।

3 <u>बाल-श्रम रोकने के उपाय एवं प्रयास</u>

भारतीय संविधान में बाल-श्रम रोकने के लिए विभिन्न प्रावधान किए गए हैं जैसे-14 वर्ष से कम आयु के किसी बालक को किसी भी रोजगार के लिए नियुक्त नहीं किया जाएगा। सभी बालकों को, जब तक वे 14 वर्ष की आयु समाप्त नहीं कर लेते, राज्य उनके लिए निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेगा आदि। बाल-श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 पहला विस्तृत कानून है, जिसके अंतर्गत सरकार ने देश के अधिकतर सभी जिलों को राष्ट्रीय बाल-श्रम प्रोजेक्ट तथा इंडस प्रोजेक्ट द्वारा जिलाधिकारियों को यह आदेश दिया हुआ है कि वे बाल-श्रम को रोकने का हर संभव प्रयास करें। इसके लिए विशेष स्कूल संचालित किए जाए, बाल-श्रमिकों के परिवारों हेतु आर्थिक सहायता और रोजगार उपलब्ध कराए जाए और 14 वर्ष तक किसी स्थिति में मजदूरीन न कराई जाए। वर्तमान समय में भारत सरकार बाल-मजदूरी को रोकने की दिशा में काफी प्रयास कर

रही है। इस कार्य में गैर- सरकारी संगठन (एनजीओ) भी समान रूप से सहयोग कर रहे हैं। बचपन बचाओ आंदोलन एनजीओ ने इस दिशा में बहुत सराहनीय काम किया है।

4 <u>उपसंहार</u>

बाल-मजदूरी केवल एक बीमारी नहीं, अपितु कई बार बीमारियों की जड़ है। बाल-श्रम जैसी कुरीति को रोकने का दायित्व सिर्फ सरकार का ही नहीं वरन हम सब का है। बाल-श्रम की समस्या हमारी प्रगति, शिक्षा,योग्यता , संवेदना और मानवता पर गंभीर सवाल खड़े करती नजर आती है। आज आवश्यकता है कि सरकारी स्तर से लेकर व्यक्तिगत स्तर तक समाज के सभी लोग इसके प्रति सजग रहे और बाल-श्रम के कारण किसी बच्चे का बचपन न छिनने दे। सब मिलकर एक सार्थक पहल करें, जिससे राष्ट्र के भावी नागरिकों के बालपन की स्वाभाविकता बनी रह सके।

पत्र - लेखन को हल करने के चरणबद्ध तरीके

(1) पत्र लिखते समय लिखने वाले तथा पत्र प्राप्त करने वाले का नाम व पता, दिनांक के साथ लिखा जाना चाहिए।

(2) पत्र का विषय स्पष्ट होना चाहिए तथा अनावश्यक बातों को पत्र में नहीं लिखना चाहिए।

(3) पत्र लिखते समय क्रमबद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

(4) पत्र का आकार संक्षिप्त होना चाहिए तथा विषय के अनुकूल होना चाहिए। कम शब्दों में अधिक बात कहने की कोशिश करनी चाहिए।

(5) पत्र की भाषा सरल,सामान्य, मधुर एवं आदर सूचक एवं शुद्ध होनी चाहिए।

(6) पत्र अधूरा नहीं होना चाहिए अर्थात पत्र को इस प्रकार समाप्त किया जाना चाहिए कि पत्र का संदेश स्पष्ट हो सके।

(7) प्रश्न-पत्र में दो प्रकार के पत्र दिए हुए है जिनमें से किसी एक को करना है। जिसे करना चाहे उसे ही करें ताकि समय बर्बाद ना हो।

उदाहरण स्वरूप पत्र-लेखन

प्रश्न- आप अभिनव कुमार है। आपके शहर में बर्ड फ्लू तीव्र गति से फैल रहा है, इसके लिए स्वास्थ्य विभाग का ध्यान आकृष्ट कराने हेतु समाचार-पत्र के संपादक को अनुरोध करते हुए लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन, दिल्ली
दिनांक- 25 जून, 2025

सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
आदर्श नगर
दिल्ली।

विषय - स्वास्थ्य विभाग के लापरवाह व्यवहार के कारण बर्ड फ्लू के तीव्रता से फैलने के संदर्भ में।

महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान स्वास्थ्य विभाग के लापरवाह व्यवहार की ओर दिलाना चाहता हूं। हमारे क्षेत्र तैनात स्वास्थ्य विभाग कर्मचारी अपने कर्त्तव्य से विमुख हो गए हैं। वे कई-कई दिनों तक हमारे क्षेत्र में नहीं आते। यदि थोड़ा देर के लिए आ भी जाते हैं, तो अपना कार्य नहीं करते, बल्कि उसके स्थान पर किसी हलवाई या चाट-पकौड़ी वाले की दुकान पर बैठकर नाश्ता आदि करके वापस चले जाते हैं। हमारे क्षेत्र में बर्ड फ्लू संक्रामक रोग फैला हुआ है, जिससे लोग परेशान हो रहे हैं। उन्हें उचित समय पर स्वास्थ्य सुविधा नहीं मिल पा रही है, जिस कारण कुछ लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ रही है। हमने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को कई बार अपनी समस्याओं से अवगत भी कराया है,
किंतु उन्होंने कोई उचित कार्यवाही नहीं की, उनकी लापरवाही कई जानें ले चुकी है। महोदय, आपसे विनम्र निवेदन है कि आप स्वयं अपने स्तर से जांच कराने की कृपा करें,ताकि हमारी समस्याओं का निवारण किया जा सके।

धन्यवाद !

प्रार्थी

अभिनव कुमार

अथवा

प्रश्न- आप अर्पित त्यागी है। आपके छोटे भाई ने बोर्ड की परीक्षा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। पुरस्कार में वह पिताजी से एक मोटरसाइकिल चाहता है। उसे बताइए कि वयस्क होने से पहले वाहन चलाना ठीक नहीं है। अपने छोटे भाई को समझाते हुए लगभग 100 शब्दों पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,
दिल्ली।
दिनांक 16 मार्च, 2025

प्रिया अनुज
शुभाशीष!

कल फोन पर पिताजी से बात हुई। यह जानकारी अत्यंत प्रसन्नता हुई कि तुमने बोर्ड की परीक्षा में काफी उत्कृष्ट अंकों के साथ सफलता प्राप्त की है। इसके लिए तुम्हें ढेर सारी बधाइयां। पिताजी ने बताया कि सफलता के पुरस्कारस्वरूप तुम मोटरसाइकिल मांग रहे हो। भारतीय वाहन अधिनियम के अंतर्गत 18 वर्ष से कम आयु में वाहन चलाना दंडनीय अपराध है, जबकि तुम्हारी आयु अभी मात्र 14 वर्ष है। तुम चिंता मत करो, उचित समय पर मैं स्वयं पिताजी से कहकर तुम्हें मोटरसाइकिल दिलवा दूंगा। मेरे विचार से अभी तुम्हें अपनी आगे आने वाली परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अभी तुम्हें जीवन की बहुत-सी महत्त्वपूर्ण परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करनी है। इनमें अच्छी सफलता तुम्हें यश एवं आत्मसंतुष्टि प्रदान करेगी। आशा है कि अब तुम मोटरसाइकिल की ज़िद न करके अपना पूरा ध्यान आगे की पढ़ाई पर लगाओगे। माताजी एवं पिताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना। तुम्हें एक बार फिर से ढेर सारा प्यार!

तुम्हारा बड़ा भाई
अर्पित त्यागी

स्ववृत्त व ई-मेल लेखन को हल करने के चरणबद्ध तरीके

(1) परीक्षा में स्ववृत्त व ई-मेल लेखन में से किसी एक को करना है। आप अपनी रूचि एवं अपनी सरलता अनुसार विषय का चयन करे।
(2) स्ववृत्त लेखन में अपनी व्यक्तिगत जानकारी एवं अपनी शैक्षणिक जानकारी को सही रूप से क्रमानुसार टेबल के माध्यम से लिखे।
(3) स्ववृत्त लेखन में अपने अनुभव की जानकारी को अनिवार्य रूप से लिखे।
(4) ई-मेल लेखन के निर्धारित प्रारूप का पालन करें ।
(5) ई-मेल लेखन में विषय संक्षिप्त रूप में लिखें।
(6) अगर आप कोई फाईल भेज रहे हे तउ अटैचमेंट को संकेतानुसार अवश्य बनाए।
(7) ई-मेल लेखन में दोनों ईमेल आईडी संकेतानुसार लिखें।

उदाहरण स्वरूप स्ववृत्त-लेखन

प्रश्न- आप नेहा वर्मा है। आपने दिल्ली से एमबीए किया है। आपको सीएमजी कंपनी में मार्केटिंग में एग्जीक्यूटिव पद के लिए आवेदन करना है। इसके लिए आप अपना एक संक्षिप्त स्ववृत्त (बायोडाटा) लगभग 80 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

नाम- नेहा वर्मा
पिता का नाम- श्री महेंद्र वर्मा
माता का नाम- श्रीमती किरण वर्मा
जन्मतिथि- 22 अप्रैल 1975
वर्तमान पता- मकान नंबर 402 सेक्टर 14 पानीपत हरियाणा
मोबाइल नंबर - 993560xxxx
ई-मेल- 27Neha@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएं-

क्र.सं.	परीक्षा / डिग्री	वर्ष	विद्यालय /बोर्ड / महाविद्यालय	विषय	श्रेणी
1	दसवीं	2010	गगन पब्लिक स्कूल पानीपत हरियाणा (सीबीएसई)	अंग्रेजी,हिंदी,गणित,संस्कृत,सामाजिकज्ञान,विज्ञान	प्रथम
2	बारहवी	2012	गगन पब्लिक स्कूल पानीपत हरियाणा (सीबीएसई	अंग्रेजी,हिंदी,अर्थशास्त्र,अकाउँटेंसी,बिजनेस, एड्मिनिस्ट्रेशन	प्रथम
3	बी.कॉम (आनर्स)	2015	एम जी विश्वविद्यालय रोहतक	बिजनेस एड्मिनिस्ट्रेशन	प्रथम
4	एमबीए	2017	एम जी विश्वविद्यालय रोहतक	मार्केटिंग	प्रथम

अन्य संबंधित योग्यताएं -

1 अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान 2 कंप्यूटर का ज्ञान (इंटरनेट व एमएस ऑफिस)

उपलब्धियां

1 आशुभाषण प्रतियोगिता (राज्य-स्तरीय) द्वितीय पुरस्कार वर्ष 2011
2 अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (2013) में प्रथम पुरस्कार,विद्यालय में हेड गर्ल

कार्येत्तर गतिविधियाँ तथा अभिरुचियाँ

1 समाचार-पत्र में व्यापारिक पत्रिकाओं का नियमित पठन
2 देश भ्रमण का शौक
3 इंटरनेट सर्फिंग

संदर्भित व्यक्तियों का विवरण

1 डॉ. रमेश चंद्र शर्मा प्रोफेसर एमडीएस विश्वविद्यालय हरियाणा
2 श्रीमती रश्मि मिश्रा प्रिंसिपल गगन पब्लिक स्कूल पानीपत हरियाणा

घोषणा-

मैं यह पुष्टि करती हूं कि मेरे द्वारा दी गई उपर्युक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

दिनांक 17.09.2024
स्थान- गुरुग्राम

नेहा वर्मा
हस्ताक्षर

अथवा

उदाहरण स्वरूप ई-मेल लेखन

प्रश्न- आप अजय प्रकाश है। आपके घर के आसपास कल कारखानों एवं यातायात का दबाव बढ़ रहा है, जिससे ध्वनि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो रही है। अतः आप नगर योजना अधिकारी को ध्वनि प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने के लिए लगभग 80 शब्दों में एक ई-मेल लिखिए।

उत्तर :

From : ajay@gmail.com

To : NagaryojanaAdhirakari2gmail.com

Cc:

BCC:

विषय: ध्वनि प्रदूषण की रोकथाम हेतु।

महोदय,

आजकल हमारे नगर में उद्योगों के बढ़ने के कारण जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। कल-कारखानों एवं यातायात का दबाव भी यहाँ अधिक है। सारा दिन कारखानों की आवाजों, ट्रक के भोपओं की आवाजों आदि के कारण अत्यंत सुविधा होती है, जिस कारण ध्वनि प्रदूषण होता है साथ ही लोगों का यहां रहना दूभर हो गया है तथा इस ध्वनि प्रदूषण के चलते विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहे हैं। आपसे प्रार्थना है कि कृपया हमारे क्षेत्र में बढ़ रहे ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण करने की व्यवस्था करें।

धन्यवाद।

प्रार्थी

अजय प्रकाश

विज्ञापन व संदेश लेखन को हल करने के चरणबद्ध तरीके -

(1) विज्ञापन व संदेश लेखन में से किसी एक विषय पर परीक्षा में लेखन कार्य करना है। अत: सबसे पहले अपनी रूचि अनुसार व विषय की जानकारी अनुसार विषय का चयन करे।

(2) विज्ञापन लिखते समय सबसे पहले जरूरी जानकारी को एकत्रित कर लेना चाहिए।

(3) सर्वप्रथम एक बाक्स बनाकर ऊपर मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए।

(4) दाएं एवं बाई किनारों पर सेल,धमाका, खुशखबरी, खुल गया जैसे लोक लुभावने शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(5) कुछ प्रेरक वाक्य-आज ही खरीदिए, सोचिए मत ,जल्दी कीजिए, सुनहरा मौका, स्टॉक सीमित है, सफलता की गारंटी, पहले आओ पहले पाओ ,आदि का प्रयोग करें।

(6) बाई और बाद में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करें।

(7) ऊपर ही या नीचे जगह देखकर कोई छोटी सी तुकबंदी भी करें जिससे पढ़ने वाला आकर्षित हो जाए।

(8) कम से कम शब्दों में विज्ञापन लिखे।

(9) शब्दों में गागर में सागर भरने की क्षमता होनी चाहिए।

(10) भाषा सरस रोचक एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए भाषा काव्यात्मक रहे तो बेहतर रहेगा।

(11) बॉक्स के दाहिने तरफ विज्ञापित वस्तुओं का आकर्षक चित्र बनाएं।

(12) विज्ञापन में सबसे नीचे आवश्यकता अनुसार पता मोबाइल नंबर आदि लिखे।

(13) प्रभावशाली विज्ञापन बनाने के लिए रंगीन पेंसिल का प्रयोग करें।

(14) संदेश लेखन करते समय सर्वप्रथम एक बॉक्स बनाएँ बॉक्स के भीतर ही संदेश लिखें।

(15) सबसे ऊपर बीच में संदेश का शीर्षक लिखे। उसके नीचे बाई ओर दिनांक और इसी के समानांतर यानी इसी के सीध में दाएं ओर समय अवश्य लिखें।

(16) जहां दिनांक लिखेंगे उसके नीचे जिसे संदेश लिखना है उसका संबोधन प्रिय मित्र, प्यारे देशवासियों आदि लिखकर संदेश लिखना प्रारंभ करें।

(17) अंत में भाई और सबसे नीचे संदेश लिखने वाले का नाम लिखा जाना चाहिए।

(18) संदेश की विषय वस्तु कम से कम शब्दों में होनी चाहिए।

(19) संदेश स्पष्ट कम से कम शब्दों में और सरल भाषा में लिखना चाहिए।

(20) संदेश विषय से संबंधित लिखे व्यर्थ की बातों को लिखने से बचें।

(21) यदि कविता श्लोक दोहे शायरी की आवश्यकता हो तो प्रयोग कर सकते हैं।

उदाहरण स्वरूप विज्ञापन लेखन

प्रश्न – जीवन रक्षक हेलमेट की उपयोगिता को जन जन तक पहुँचाने हेतु एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

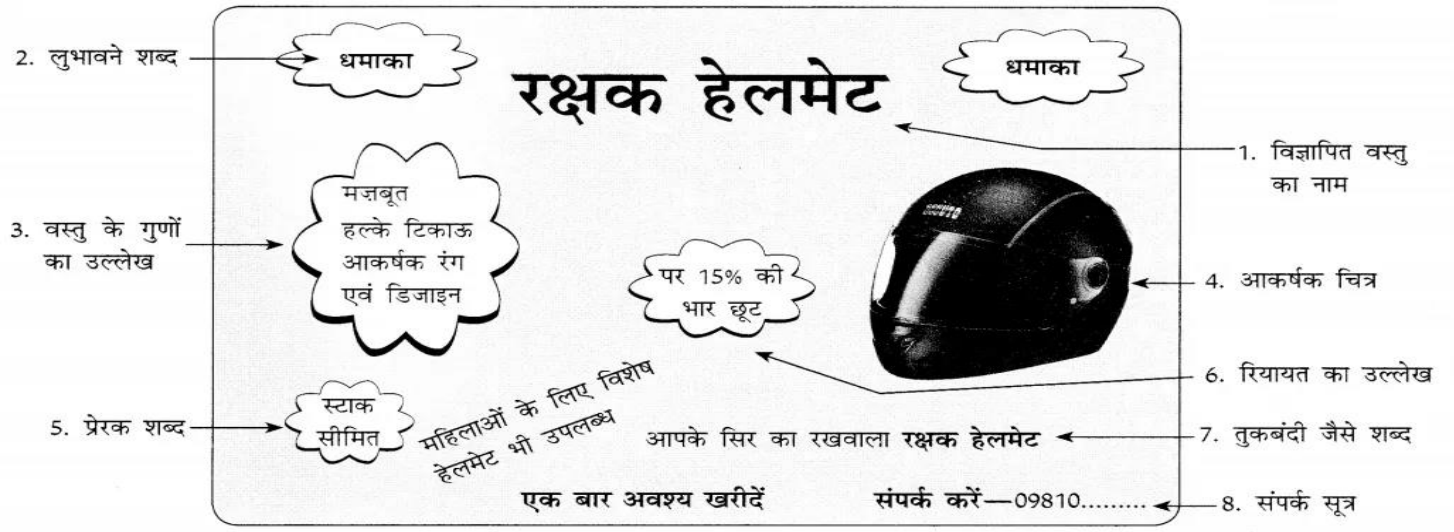

अथवा

उदाहरण स्वरूप संवाद -लेखन

प्रश्न- शिक्षक दिवस के अवसर पर हिंदी शिक्षक को भावपूर्ण संदेश लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

शिक्षक दिवस पर हिंदी शिक्षक को संदेश

दिनांक - 5 सितंबर 2024
समय- प्रातः 9:00 बजे

आदरणीय महोदय,

आज शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आपको हार्दिक शुभकामनाएं। महोदय,आपके द्वारा दी गई शिक्षा के कारण मैं आज एक अच्छे पद पर कार्यरत हूँ। आपके द्वारा दी गई शिक्षाएं मेरा सदैव मार्गदर्शन करती है। आपके मार्गदर्शन के बिना मेरे लिए इस मुकाम को प्राप्त कर पाना संभव नहीं था। मैं भगवान से ही प्रार्थना करता हूँ कि आप सदा स्वस्थ एवं खुश रहें।

आपका छात्र

रोहित